डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15 मार्च, 2021
वर्षः 04, अंक–05

भारतीय जनमानस में नारी सदैव पूज्यनीय रही है : कुलपति 03

मैराथन का उद्देश्य प्रतिभागियों में खेल भावना का विकास करना हैः खेल निदेशक 04

सामाजिक सरोकारों को समझने एवं अपनाने की जरूरत हैः कुलाधिपति

सरकार ऑनलाइन टीचिंग को लेकर गंभीर हैः उपमुख्यमंत्री

ज्ञान एवं अर्थव्यवस्था एक दूसरे के पूरक हैं : डॉ0 राठौर

विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है : कुलपति

12 मार्च । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 25 वे दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन कोविड–19 के अनुपालन के साथ किया गया। समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने की।

समारोह को संबोधित करते हुए कुलाधिपति ने कहा कि भारत वर्तमान समय में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आज ही के दिन 1930 में महात्मा गांधी ने साबरमती आश्रम से दांडी यात्रा का शुभारम्भ किया था। ब्रिटिश सरकार द्वारा नमक पर टैक्स लगाने का विरोध अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से प्रारम्भ हुआ। यह आंदोलन देश का आंदोलन बन गया। 150 वर्षों से लगातार संघर्ष के बाद देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, विद्वजनों तथा युवाओं ने अपनी जान न्यौछावर कर आजादी दिलायी है। आजादी के लिए देश ने भीषण यातनाओं को झेला है, तब जाकर कहीं स्वराज की स्थापना हो पायी। भारत में देश का हित सर्वोपरि हो, इसी संकल्प पर हमें कार्य करना होगा, साथ ही आत्मनिर्भर भारत का संकल्प लेना होगा। आने वाली पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षों की गाथा से परिचित कराना होगा जिससे वे समझ सकें कि आजादी के क्या मूल्य हैं?

कुलाधिपति ने कहा कि भारत सरकार द्वारा आयोजित इस अमृत महोत्सव के दौरान प्रत्येक युवा स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी कथाओं पर अध्ययन कर आपसी चर्चा का विषय बनाएं। विश्वविद्यालयों का यह दायित्व बनता है कि वे आने वाली पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों से परिचित कराएं। सभी विश्वविद्यालय संकल्प लें कि 15 अगस्त, 2022 तक विशेष अभियान में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर संगा. ष्ठी करें और उन स्थलों का भम्रण करें जो स्वतंत्रता संग्राम के साक्षी बने हैं। देश को आजादी मिल गई है परन्तु अभी सही अर्थों में देश के समक्ष कई चुनौतियां है। भारत सरकार एवं राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को गांव–गांव तक पहुंचाने के लिए विश्वविद्यालयों एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों को ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर जनसहयोग करना होगा। कुलाधिपति ने कहा कि सामाजिक सरोकारों को समझने एवं उसे अपनाने की जरूरत है। स्वास्थ्य शिक्षा, पर्यावरण प्रदूषण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा से जनमानस को प्रेरणा मिलेगी। देश के लिए जीने की आवश्यकता है, यह हम सभी का कर्तव्य है।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रदेश के उपमुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ0 दिनेश शर्मा ने कहा कि दीक्षांत समारोह, ग्रहण की गयी शिक्षा को समर्पित करने का एक अवसर है। समाज के लिए शिक्षा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हो सके, इस पर कार्य करने की आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा का स्तर बढ़े इसी लिए सरकार द्वारा राज्य विश्वविद्यालयों में समान पाठ्यक्रम लागू करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। वर्तमान समय में राज्य सरकार द्वारा डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना की गई है। कोविड–19 के दौरान राज्य विश्वविद्यालयों ने 30 विभिन्न पाठ्यक्रमों में 79 हजार ई–कंटेंट अपलोड किए हैं। इसमें वीडियो लेक्चर, वायस एवं टेक्स्ट को शामिल किया गया है। डिजिटल लाइब्रेरी को देशभर के विद्यार्थी एवं शिक्षक, शिक्षण एवं ज्ञान के लिए अपने उपयोग में ले रहे हैं। केन्द्रीय संगठनों के साथ एम0ओ0यू0 किया गया है। लघु एवं मध्यम उद्योगों के साथ संस्थानों का अनुबंध कर छात्र–छात्राओं को अध्ययन करते–करते रोजगार पाने का अवसर तैयार किया जा रहा है।

डॉ0 दिनेश शर्मा ने बताया कि अयोध्या में श्रीराम विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव कई निजी संगठनों द्वारा प्राप्त हुआ है। इस विश्वविद्यालय में ज्योतिष, धर्मग्रन्थों एवं कर्मकांडों जैसे महत्वपूर्ण विषयों का अध्ययन का प्रस्ताव आया है। राज्य सरकार शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए ऑनलाइन टीचिंग को लेकर गंभीर है और इस क्षेत्र में कार्य कर रही है।

कार्यक्रम के मुख्य अभ्यागत अतिथि विश्व मौसम विज्ञान संगठन के स्थायी प्रतिनिधि एवं भारतीय मौसम विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ0 लक्ष्मण सिंह राठौर ने कहा कि आधुनिक युग में ज्ञान की नव–जागरण युगीन ऐतिहासिक क्रांतिकारी भूमिका के व्यतीत हो जाने के बाद आज का वर्तमान समय कौशल विकास का ही है। ज्ञान एवं अर्थव्यवस्था एक दूसरे के पूरक है। पाश्चात्य देशों के दबाव में आकर शिक्षण व्यवस्था को बड़े स्तर पर प्रभावित किया गया, जिसका परिणाम सुखद नहीं रहा। स्वतंत्रता के उपरांत जिस रूप में शिक्षा का माडल अपनाया गया, उसमें स्पष्ट दृष्टिकोण का समावेश नहीं हो सका।

डॉ0 राठौर ने कहा कि भारत को यदि राष्ट्रीय सकल नामांकन अनुपात की स्थिति को ठीक करना है तो हमें कौशल विकास आधारित पाठयक्रमों के साथ–साथ अन्तर्विषयक शोध केन्द्रों की स्थापना पर जोर देना होगा। डॉ0 राठौर ने कहा कि नई शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों में इन्क्यूबेशन केन्द्रों की स्थापना, विभिन्न प्रणालियों का एनसीआईवाई के साथ समन्वय कर शिक्षा नीति में और भी विस्तार किया गया है। यह विदित है कि भारत में प्राचीनकाल से ही कौशल विकास, अभियांत्रिकी एवं कारीगरी अत्यन्त विकसित अवस्था में रही थी जिसके स्पष्ट रूप से प्रमाण विद्यमान हैं। आधुनिक भारत का प्रयास है कि भारत पुनः प्राचीन एवं ऐतिहासिक लय को प्राप्त करे। किसी भी देश की उच्च शिक्षा का प्रदर्शन उसकी प्राथमिक शिक्षा की बुनियाद पर निर्भर करता है। उच्च शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों को शैक्षिक जन जागरूकता के लिए सक्रिय भागीदारी निभानी होगी। केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों ने प्राथमिक शिक्षा के सभी आयामों पर गंभीरता से मंथन किया है अभी इसे और व्यापक तौर पर अपनाने की आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति में बुनियादी साक्षरता, स्थानीय भाषाओं के विकास, बाल साहित्य, डिजिटल इंन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग, पोषण स्वास्थ्य जैसे प्रमुख विषयों पर गंभीरता से विचार कर इन्हें क्रियात्मक रूप प्रदान करने पर बल दिया गया है। आज के विज्ञान को हमें जीवन मूल्यों व नैतिक दृष्टि की आभा से समन्वित करना होगा। इससे हम प्राकृतिक आपदाओं पर नियंत्रण कर आधुनिक भारत का निर्माण कर सकेंगे। प्रकृति के मूल में आधुनिक भारत का विकास है।

डॉ0 राठौर ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को ज्ञान व विचार के अनंत प्रकाश की ओर ले जाता है और यह यात्रा उसे आधारभूमि से जोड़े रहती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में शोध एवं नवप्रर्वतनों को सुदृढ़ करने के लिए प्रभावी नीतियों का निर्माण किया जा रहा है, शीघ्र ही उसके सुखद परिणाम जनमानस को मिलेंगे। भारत की चुनौती अपनी मानव सम्पदा को श्रेष्ठता से आगे बढ़ाते हुए उसे तकनीकी संपदा व गुणात्मक श्रेष्ठता में बदलना है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार की उच्च शिक्षा व विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी विभाग की राज्यमंत्री श्रीमती नीलिमा कटियार रहीं।

दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि कुलाधिपति की उपस्थिति विश्वविद्यालय के लिए गौरव के साथ–साथ ऐतिहासिक भी है। समय–समय पर महामहिम के दिशा–निर्देश से विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली एवं शैक्षिक वातावरण के निर्माण में सकारात्मक परिवर्तन आया है। विश्वविद्यालय अपनी स्थापना से लेकर अबतक महत्वपूर्ण उपलब्धियों का साक्षी रहा है। विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। वर्तमान समय में विश्वविद्यालय से सम्बद्ध 738 महाविद्यालय हैं। 06 लाख से अधिक विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय विभिन्न पाठ्यक्रमों से जुड़े हैं। सत्र 2021–22 से परिसर में 25 नये रोजगारपरक पाठ्यक्रमों का संचालन करने का निर्णय लिया गया है। इस प्रकार नियमित एवं स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों की संख्या परिसर में लगभग 58 हो चुकी है।

प्रो0 सिंह ने कहा कि यह अपार हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय की स्थापना के 46वें वर्ष में 04–6 मार्च, 2021 को अपना पहला नैक मूल्यांकन पूर्ण करा लिया है। राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति 2020 के अनुपालन में विश्वविद्यालय ऑनलाइन शिक्षा से सम्बन्धित ई–कंटेंट तैयार कर परिसर एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को सरल एवं सुगम बना रहा है। विश्वविद्यालय ने चौथी बार दिव्य दीपोत्सव कार्यक्रम में सात हजार स्वयंसेवकों के साथ 6 लाख से अधिक दीपों का प्रज्ज्वलन कर गिनीज बुक वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज किया है। विश्वविद्यालय ने राज्यस्तरीय अयोध्या हॉफ मैराथन का आयोजन कर खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का कार्य किया है।

दीक्षांत समारोह में अभ्यागत अतिथि डॉ0 लक्ष्मण सिंह राठौर को मानद् उपाधि प्रदान की गई। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्रम प्रदान कर किया।

उपाधि प्राप्त छात्रों को दीक्षोपदेश एवं कर्तव्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई। 25वें दीक्षांत समारोह में कुल 115 स्वर्ण पदक प्रदान किए गये जिसमें 28 कुलपति स्वर्णपदक, 70 कुलाधिपति स्वर्णपदक तथा दान स्वरूप पदक के रूप में 17 स्वर्णपदक प्रदान किए गए। दीक्षांत समारोह में कुल 777 स्नातक एवं परास्नातक उपाधि एवं 24 पी0एच0डी0 की उपाधि दी गई।

समारोह में आकर्षण का केन्द्र अयोध्या के ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय के लगभग 25 छात्र–छात्राएं रहे जिन्हें कुलाधिपति ने फल एवं शिक्षण सामग्री भेंट किया। इस समारोह का मुख्य आकर्षण पुरूष परिधान में सफेद कुर्ता एवं सफेद पायजामा तथा महिला परिधान में सफेद कुर्ता एवं सफेद सलवार तथा लाल बार्डर की साड़ी के साथ ही सिर पर अवधी परिधान की परम्परागत पगड़ी रही।

समारोह में सर्वप्रथम कुलाधिपति एवं मुख्य अतिथि को 65 बटालियन एन0सी0सी0 के कैडेट द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। डोगरा रेजीमेंट सेंटर द्वारा मिलेट्री बैंड से राष्ट्रगान धुन की प्रस्तुति की गयी ।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर परिसर में स्थित डॉ0 राममनोहर लोहिया, सरदार बल्लभभाई पटेल, महात्मा गांधी एवं स्वामी विवेकानंद की प्रतिमाओं पर कुलाधिपति एवं अतिथियों के द्वारा माल्यार्पण किया गया। दीक्षांत समारोह की शोभायात्रा विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन से प्रारम्भ होकर स्वामी विवेकानंद सभागार में दीक्षांत समारोह आयोजन स्थल तक सम्पन्न हुई।

25वें दीक्षांत समारोह का शुभारम्भ कुलाधिपति एवं अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। छात्राओं द्वारा वंदेमातरम एवं विश्वविद्यालय कुलगीत का समूह गायन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो0 अशोक शुक्ल ने किया।

इस अवसर पर अयोध्या सांसद श्री लल्लू सिंह, विधायक वेद प्रकाश गुप्त, विधायक रामचन्द्र यादव, महापौर ऋषिकेश उपाध्याय, जिलाधिकारी अनुज कुमार झा, डी0आई0जी0 एवं एस0एस0पी0, ब्रिगेडियर जे0एस0 विर्क, अयोध्या के गणमान्य संत, कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी, धनंजय सिंह, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह कार्यपरिषद के सदस्यगण, विद्यापरिषद के सदस्यगण, विभिन्न विषयों के संकायाध्यक्ष, निदेशक, विभागाध्यक्ष, समन्वयक, शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं बड़ी संख्या में पदक धारक एवं उपाधि धारक रहे।

मंथन

15 मार्च, 2021: फाल्गुन, शुक्ल पक्ष, द्वितीया, विक्रम संवत् 2077

''जीवन ठहराव और गति के बीच का संतुलन है''

कोविड–19 महामारी और टीकाकरण

वैक्सीन शरीर को किसी बीमारी, वायरस या संक्रमण से लड़ने के लिए तैयार करती है। वैक्सीन शरीर के इम्यून सिस्टम यानी प्रतिरक्षा प्रणाली को संक्रमण की पहचान करने के लिए प्रेरित करती है और उसके विरुद्ध शरीर में एंटीबॉडी बनाते हैं जो बीमारी से लड़ने में हमारे शरीर की मदद करती हैं। वैक्सीन से कुछ लोगों को साइड इफेक्ट्स का सामना करना पड़ सकता है। हल्का बुखार या खारिश होना टीकाकरण के सामान्य लक्षण हैं। वैक्सीन लगने के कुछ समय पश्चात् ही उस बीमारी से लड़ने की इम्यूनिटी विकसित होती है। वैक्सीन आधुनिक दुनिया की सबसे बड़ी चिकित्सकीय उपलब्धि है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वैक्सीन की वजह से हर साल करीब बीस से तीस लाख लोगों की जान बच पाती है। बाजार में लाए जाने से पहले वैक्सीन की गंभीरता से जांच होती है। पहले लैब में और फिर जानवरों पर इनका परीक्षण होता है फिर बाद में मनुष्यों पर वैक्सीन का ट्रायल होता है। अधिकांश देशों में स्वास्थ्य संस्थाओं से अनुमति प्राप्ति के बाद ही लोगों को वैक्सीन लगाई जाती हैं। टीकाकरण में कुछ जोखिम अवश्य हैं, लेकिन अन्य दवाओं की ही तरह, इसके फायदों के सामने वो कुछ भी नहीं। उदाहरण के लिए, बचपन की कुछ बीमारियाँ जो एक पीढ़ी पहले तक बहुत सामान्य थीं, वैक्सीन के कारण तेजी से लुप्त हो गई हैं। पूरे विश्व में कोविड–19 से मुक्ति के लिए कई टीके बनाए गए हैं। भारत में दो टीके तैयार किए गए हैं, एक का नाम है कोविशील्ड जिसे एस्ट्राजेनेका और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने तैयार किया और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने इसका उत्पादन किया. और दूसरा टीका है भारतीय कंपनी भारत बायोटेक द्वारा बनाया गया कोवैक्सीन। कोविड वैक्सीन लगवाना अनिवार्य नहीं किया गया है, लेकिन ज्यादातर लोगों को यह सलाह दी जाती है कि वो वैक्सीन लगवाएं। वैक्सीन ना सिर्फ कोविड–19 से सुरक्षा देती है, बल्कि दूसरों को भी सुरक्षित करती है। टीकाकरण ही महामारी से बाहर निकलने का सबसे महत्वपूर्ण जरिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि संक्रमण को रोकने के लिए कम से कम 65–70 प्रतिशत लोगों को वैक्सीन लगानी होगी, जिसका मतलब है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को टीका लगवाने के लिए प्रेरित करना होगा।

मेरा रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे...

शशांक पाठक

भारत ऐसी भूमि है जहां पर कई वीर सपूतों ने जन्म लिया और अपना सारा जीवन अपने राष्ट्र के नाम न्योछावर कर दिया। उनमें से ही शहीद–ए–आजम भगत सिंह का नाम हम बड़े ही आदर और श्रद्धा भाव से लेते हैं। भगत सिंह ने अल्पायु में ही अपना सर्वस्व देश की स्वतंत्रता के लिए अर्पित कर दिया। भगत सिंह का जन्म एक किसान परिवार में 28 सितंबर 1907 को पश्चिमी पंजाब के लायलपुर जनपद के बंगा गांव में हुआ था। बंटवारे के बाद यह भाग पाकिस्तान में चला गया।

भगत सिंह के पिता का नाम सरदार किशन सिंह व माता का नाम विद्यावती कौर था। भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह और स्वर्ण सिंह भारत की आजादी में अपना सहयोग दे रहे थे। ये दोनों करतार सिंह सराभा द्वारा संचालित गदर पाटी के सदस्य थे। भगत सिंह पर इन दोनों का गहरा प्रभाव पड़ा था। इसलिए ये बचपन से ही अंग्रेजी शासन से घृणा करने लगे थे। भगत सिंह, करतार सिंह सराभा और लाला लाजपत राय से अत्यधिक प्रभावित थे। 13 अप्रैल 1919 को घटित जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह के मन पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला। इन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़ कर भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की। वर्ष 1922 मे चौरी–चौरा हत्याकांड के बाद गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन वापस लेने पर भगत सिंह बहुत निराश हुए। यहीं से उनका अहिंसा पर विश्वास कम हो गया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एकमात्र रास्ता है। इतिहास में काकोरी कांड नाम से मशहूर 9 अगस्त, 1925 की सरकारी खजाने को लूटने की घटना ने भगत सिंह को बहुत प्रभावित किया। काकोरी काण्ड में 04 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह अत्यअधिक उद्विग्न हुए। उन्होंने 1928 में अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और यातना सह सकने वाले नवयुवक तैयार करना था जो आजादी की लड़ाई में उनका साथ दे सकें।

वर्ष 1928 में साइमन कमीशन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस नेता लाला लाजपत राय को पुलिस की लाठियों ने घायल कर दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद उनका निधन हो गया। इस घटना ने भगत सिंह को इतना झकझोर दिया कि भगत सिंह ने इसका बदला लेने के लिए पुलिस सुपिरिटेंडेंट स्कॉट की हत्या करने की योजना बनाई। लेकिन एक गलती की वजह से स्कॉट की जगह पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या हो गई।

भगत सिंह चाहते थे कि बिना किसी का रक्त बहाए अंग्रेजों तक उनकी आवाज भी पहुंचे, इसीलिए उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के साथ 8 अप्रैल 1929 को सेंट्रल असेंबली में एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहां कोई मौजूद नहीं था और इंकलाब जिंदाबाद के नारे के साथ आजादी के लिए लिखे गए पर्चों को हवा में उछाल दिया। उसके बाद दोनों ने आत्मसमर्पण कर दिया। उनको गिरफ्तार कर लिया गया और जेल भेज दिया गया। 23 वर्ष के इस नौजवान की राष्ट्रभक्ति से अंग्रेजी शासन की जड़ें हिल गईं।

भगत सिंह ने अंग्रेजी में एक लेख लिखा 'मैं नास्तिक क्यों हूं?' 7 अक्टूबर 1930 को अदालत द्वारा 68 पृष्ठों का निर्णय लिया गया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को फांसी की सजा सुनाई गई। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देना प्रसन्नता से स्वीकार किया। फांसी पर जाने से पहले भगत सिंह लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। 23 मार्च 1931 को भारत माता के वीर सपूतों भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दे दी गयी।

फांसी पर जाते हुए तीनों 'मेरा रंग दे बसंती चोला...' गीत गाते हुए 'भारत माता की जय' के नारों का उद्घोष कर रहे थे। देशभक्ति की ऐसी मिसाल कोई और नहीं है इसी वजह से इस दिन को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून...

चंद्रभूषण मिश्र

प्राचीन काल से जल को हमारे जीवन का अहम हिस्सा माना गया है। जल के बिना हम सुनहरे कल की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं, बिना जल के कोई भी जीव–जंतु जीवित ही नहीं रह सकता है। आज वही जल संकटग्रस्त है।

हमारी पृथ्वी पर 70 प्रतिशत से अधिक भाग जल से घिरा हुआ है। पृथ्वी पर उपलब्ध जल की कुल मात्रा में से केवल तीन प्रतिशत जल ही स्वच्छ बचा है और उसमें से भी करीब दो प्रतिशत जल पहाड़ों व ध्रुवों पर बर्फ के रूप में जमा है। शेष एक प्रतिशत जल का उपयोग ही पेयजल, सिंचाई, कृषि तथा उद्योगों के लिए किया जाता है।

पृथ्वी पर उपलब्ध जल में से एक प्रतिशत जल में से भी लगभग 95 प्रतिशत पानी भूमिगत जल के रूप में उपलब्ध है और बाकी पानी पृथ्वी पर सतही जल के रूप में तालाबों, झीलों एवं नदियों में उपलब्ध है। इससे स्पष्ट है कि पानी की हमारी अधिकांश जरूरत की पूर्ति भूमिगत जल से ही होती है, लेकिन भूमिगत जलस्तर बढ़ने के बजाय तेजी से घट रहा है, ऐसे में जल संकट की स्थिति भयावह है।

पिछले कुछ दशकों से अनियोजित विकास योजनाओं और नगरीकरण की वजह से जल की खपत में बहुत तेज वृद्धि हुई है। यह एक चिंता का विषय है कि मनुष्य अपने व्यावसायिक गतिविधियों के द्वारा पृथ्वी पर पाए जाने वाले जल का अनावश्यक खपत बढ़ा कर भविष्य में आने वाले संकट को निमंत्रण दे रहा है। पर्यावरण सा क्षरता के अभाव में नगरों एवं कल–कारखानों से निकलने वाले दूषित जल से नदियों का जल भी प्रदूषित हो रहा है, इस वजह से जैव विविधता भी खतरे में है।

जल की समस्या से बचने के लिए तथा विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को जल के प्रति जागरुकता के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 22 मार्च सन् 1992 में ब्राजील के रियो–डी–जनेरियो में आयोजित पर्यावरण तथा विकास के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में प्रत्येक वर्ष विश्व जल दिवस मनाने का प्रस्ताव पास किया गया था। 22 मार्च को विश्व जल दिवस का उद्देश्य केवल लोगों के बीच में साफ पीने योग्य पानी का महत्व बताना ही नहीं है अपितु उसको संरक्षित करना भी है।

वर्ष 2021 में विश्व जल दिवस के लिए थीम 'पानी की महत्ता' है। आज भारत समेत विश्व के कई देश पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। पीने योग्य पानी की कमी से आज कई जानलेवा जल जनित रोग महामारी का रूप ले रही है। वहीं दूसरी ओर ऐसा कहा जाता है कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए भी हो सकता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

सुरभि गोस्वामी

नारी शक्ति एक ऐसी शक्ति है जो सारे देश को, समाज को, कभी मां के रूप में, कभी एक बहन के रूप में, कभी एक पत्नी के रूप में और कभी एक बेटी के रूप में एकता के सूत्र में बांधती है।

प्राचीन काल से आज तक गार्गी, लोपामुद्रा, अनुसइया, सीता, रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होल्कर, सावित्रीबाई फुले, सरोजनी नायडू, इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, कल्पना चावला आदि ने अपने कार्यों से नारी के अदम्य साहस एवं अद्भुत प्रतिभा से देश का नाम रोशन किया है।

हमारी प्राचीन संस्कृति में नारी की उच्च स्थिति रही है। ग्रंथों में वर्णित है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः, अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। हमारी परम्परा में माता का हमेशा से सम्मान रहा है। माता को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है, ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। धार्मिक ग्रथों में कौशल्या–राम, देवकी–कृष्ण एवं पार्वती–गणपति के कई उद्धरण संदर्भित हैं। सभी ने अपनी माताओं के सम्मान को सर्वोपरि रखा।

आज के भौतिकतावादी युग में नारी सम्मान की स्थिति चिंताजनक है। वर्तमान में नारी के शोषण की अनेकानेक घटनाएं घटित होती रहती है। नारी को 'भोग की वस्तु' समझकर समाज 'अपने तरीके' से 'इस्तेमाल' कर रहा है। आजकल अखबारों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर दृष्टि डालने पर पता चलता है कि लैंगिक असमानता, भ्रूण हत्या एवं महिलाओं के साथ अभद्रता की पराकाष्ठा हो रही है, यह सभ्य समाज पर कलंक है।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस प्रत्येक वर्ष, 08 मार्च को विश्व भर में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्रेम प्रकट करते हुए, महिलाओं के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से समान भागीदारी के लिए मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की शुरुआत से वर्ष 1908 में हुई थी, जब अमरीका के न्यूयॉर्क शहर में करीब 15 हजार महिलाएं सड़कों पर उतरी थीं। ये महिलाएं काम के कम घंटों, बेहतर वेतन और मतदान के अधिकार की मांग के लिए प्रदर्शन कर रही थीं। क्लारा जेटकिन ने वर्ष 1910 में विश्व स्तर पर महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव किया था।

पहला अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस वर्ष 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटजरलैंड में मनाया गया था। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को औपचारिक मान्यता वर्ष 1975 में उस वक्त मिली, जब संयुक्त राष्ट्र ने इसे मनाना शुरू किया।

नारी चाहे वह शिक्षक/वकील/ डॉक्टर/पत्रकार/सैनिक/सरकारी कर्मी/इंजीनियर जैसे किसी पेशे में हों या फिर गृहिणी ही क्यों न हों, समानता का अधिकार उन्हें भी उतना ही है, जितना की पुरुषों को है। आधी आबादी के तौर पर महिलाएं हमारे समाज एवं जीवन का एक मजबूत आधार है। महिलाओं के बिना इस दुनिया की कल्पना करना ही असंभव है।

सुविचार

स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है।

–महात्मा बुद्ध

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी होती है। विज्ञान दिवस, रेडियो दिवस और संत गाडगे पर लेख बेहद रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगे।

–अभिषेक गुप्ता

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
आशुतोष, हर्षित, एवं अंशुमान

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

मातृभाषा के विलुप्त होने पर इतिहास के विलुप्त होने का खतरा हैः उच्चायुक्त

21 फरवरी। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर भाषा विभाग द्वारा संत कबीर सभागार में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रविशंकर सिंह ने कहा कि यूनेस्को के द्वारा घोषित विश्व मातृभाषा दिवस का आयोजन किया जाना हर्ष का विषय है। हम सभी अपनी मातृभाषा से दिनोंदिन दूर होते जा रहे हैं। मातृभाषा से विरत होना ठीक नहीं है। आपस में आत्मीयता मातृभाषा से झलकती है। आजकल हम सभी बनावटी होते जा रहे हैं, जो चिंता जनक है। कुलपति ने कहा कि जब भी अवसर मिले, अपने भावों को मातृभाषा में प्रकट करें। संस्कृति के लिए भाषा की कोई सीमा नहीं होती। सूरीनाम का उदाहरण देते हुए कुलपति ने कहा कि वहां रह रहे लोग हम से ज्यादा भारतीयता में रचे–बसे हैं। हमारी संस्कृति सुदूर देशों में भी सुरक्षित है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि त्रिनिदाद एवं टोबैगो के उच्चायुक्त डॉ० रोजर गोपाल ने जय श्रीराम का उद्घोष करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि मेरा इतिहास मां सरस्वती, हिमालय, रामायण और महाभारत से है। यहां मैं अजनबी नहीं हूं बल्कि इसी उत्तर प्रदेश की संतति हूं। मेरा तन मन अयोध्या की पवित्र भूमि पर आकर आह्लादित हो गया है । डॉ० गोपाल ने कहा कि रामायण और महाभारत हमारी त्रिनिदाद एवं टोबैगो की संस्कृति में गहराई से रची बसी हुई है। राम की वाणी में मधुरता की वजह उसमें व्याप्त बहुभाषिकता है। एक भाषा की जानकारी आपको सीमित ज्ञान देती है जबकि बहुभाषिकता ज्ञान को विस्तार देती है। आज मातृभाषाओं को लेकर संकट का दौर है, इसे बचाने के लिए सक्रियता दिखानी होगी। यदि अपनी मातृभाषा से दूर होंगे तो हम अपनी संस्कृति से दूर हो जाएंगे। मातृभाषा के विलुप्त होने पर इतिहास के विलुप्त होने का खतरा है। सुनहरे भविष्य के लिए बीते कल अर्थात इतिहास का संरक्षण जरूरी है। यूनेस्को के अनुसार सीमित भाषाओं में शिक्षण कार्य होता है और मातृभाषाओं में इंटरनेट पर आवश्यक एवं शिक्षण सामग्री उससे भी अल्पमात्रा में उपलब्ध है। यह मानव के समानता के अधिकार का तिरस्कार है। आज वक्त की जरूरत है कि हम मातृभाषाओं के संरक्षण के लिए अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करके मानवता को बचाएं।

विशिष्ट अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के भोजपुरी भाषा केंद्र के संस्थापक प्रो० सदानंद शाही ने अंतर्राबष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का सिंहावलोकन करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि मातृभाषा संवाद का माध्यम है, लेकिन यह मात्र संवाद ही नहीं स्थापित करती है अपितु अस्तित्व को बनाए रखती है। वर्तमान में मातृभाषाओं को लेकर हीनता का भाव होना एक संकट के रूप में उभरा है। आजकल मूल्यों एवं आदर्शों को लेकर चिंता व्याप्त है, चिंता के मूल में मातृभाषा से दूरी है। भाषा एवं परिवेश का अटूट संबंध है। क्षेत्रीय भाषाओं जैसे भोजपुरी, अवधी, आदि जनपदीय भाषाओं में संतों की वाणी प्रवाहित होती है। भाषा में सद्भाव एवं प्रेम का निरंतर प्रवाह होता है। किसी भी भाषा को कमतर नहीं आंकना चाहिए। आज भाषाओं की नागरिकता पर संकट मंडरा रहा है, मातृभाषा के नागरिक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी है कि मातृभाषा जितना देती है, उसी के सापेक्ष उतना ही लौटाना चाहिए। जिसके पास जितनी ज्यादा भाषा होती है वह उतना ही बड़ा मनुष्य है। अयोध्या की पावन भूमि से ही डॉ० राममनोहर लोहिया ने मातृभाषा का आंदोलन खड़ा किया। मातृभाषा को बचाने की मुहिम मानवता को बचाने की मुहिम होती है।

विशिष्ट अतिथि अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक डॉ० योगेन्द्र प्रसाद सिंह ने कहा कि कोई भी देश के निर्माण के केंद्र में भाषा या धर्म है लेकिन भारत एक निराला देश है जहां अनेकानेक भाषा और विभिन्न धर्मों के लोग सद्भावना के साथ रहते हैं। कई लातिनी अमेरिकी देशों में भारतीय भाषाएँ वहां की संस्कृति में रची–बसी हैं।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए भारतीय उच्च अध्ययन केंद्र, शिमला के डॉ० रामशंकर सिंह ने कहा कि भाषा के विकास के लिए चिंतन, मनन एवं अनुसंधान की जरूरत होती है। औपनिवेशिक भाषा में व्यक्त विचारों में मूल सांस्कृतिक चेतना का सदैव अभाव होता है। मातृभाषा में ही सांस्कृतिक संरक्षण किया जा सकता है। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए भाषा विभाग की समन्वयक डॉ० गीतिका श्रीवास्तव ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय भाषा दिवस मनाने का उद्देश्य मातृभाषा को समादर एवं प्रोत्साहन देना है।

कार्यक्रम में जनक दुलारी रामलीला मंडली, अयोध्या की राम विवाह की नाट्य प्रस्तुति, शालिनी राजपाल द्वारा सिंधी लोकगीत और अवधी के इतिहास पर जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों जितेंद्र शुक्ला एवं शिवेंद्र प्रताप सिंह द्वारा बनाई गई डाक्यूमेंट्री की प्रस्तुति की गयी। कार्यक्रम का संचालन डॉ० निखिल उपाध्याय ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन प्रो० अशोक शुक्ला ने किया।

कार्यक्रम के संयोजन में हिन्दी विभाग के समन्वयक डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के समन्वयक डॉ० राजेश सिंह कुशवाहा की सक्रिय भूमिका रही। इस अवसर पर प्रो० हिमांशु शेखर सिंह, प्रो० एस0एस0 मिश्र, प्रो० नीलम पाठक, सहायक कुलसचिव डॉ० रीमा श्रीवास्तव, डॉ० दिनेश सिंह, डॉ० शैलेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ० आर0 एन0 पांडेय, डॉ० अनिल विश्वा, पीयूष राय, शालिनी पांडेय आदि शिक्षकों सहित विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

आत्मनिर्भर भारत के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास जरूरी : प्रो0 सिन्हा

09 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विभाग में 25वें दीक्षान्त समारोह के उपलक्ष्य में 'भारतीय अर्थव्यवस्था में संकट' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 पी0 के0 सिन्हा ने कहा कि कोविड–19 महामारी से ग्रस्त भारतीय अर्थव्यवस्था विभिन्न प्रकार की चुनौतियों एवं सम्भावनाओं को लेकर समस्याओं के दौर से गुजर रही हैं। आत्मनिर्भर भारत के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास जरूरी है। उन्होंने कहा कि आज भारतीय अर्थव्यवस्था निश्चित रूप से चुनौती पूर्ण संकट के दौर से गुजर रही हैं जिसके कारण रोजगार की निम्नदर, जीवन स्तर की अल्पता तथा क्रय शक्ति की कमी मुख्य चुनौती है।

विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि आज भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वालम्बन के लिए सरकारी नीतियों के साथ जन सहभागिता भी जरूरी है, तभी अर्थव्यवस्था का विकास सुनिश्चित हो पायेगा।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने किया। इस अवसर पर प्रो0 मृदुला मिश्रा, डॉ0 प्रिया कुमारी, डॉ0 अलका श्रीवास्तव, डॉ0 सविता देबी, पल्लबी सोनी, रीमा सिंह, श्रीमती सरिता सिंह, विजय कुमार शुक्ला, शिव शंकर यादव, हीरा यादव, एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

पत्रकारिता में सदैव सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना होगाः आशुतोष

09 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 25 वे दीक्षांत समारोह के उपलक्ष्य में दीक्षांत सप्ताह के क्रम में जन. संचार एवं पत्रकारिता विभाग में "वर्तमान परिवेश में मीडिया की भाषा" विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया।

व्याख्यान को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि दैनिक जागरण के राज्य संपादक आशुतोष शुक्ल ने कहा कि पत्रकारिता के लिए भाषा विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान होना आवश्यक है। पत्रकार असाधारण कार्य करते हुए भी अत्यंत साधारण रहता है। शुक्ल ने बताया कि वह भाषा अत्यन्त सुंदर है जिसमें आप स्वयं सरलता पूर्वक अभियक्ति कर सके। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम सब अपनी मातृभाषा का प्रयोग करें जो आत्मविश्वास मातृभाषा से स्पष्ट हो सकता है। वह प्रभाव अन्य भाषा में नहीं प्राप्त हो सकता। सरल और छोटे वाक्यों की भाषा में पठनीयता अधिक होती है और उसे सहजतापूर्वक समझा जा सकता है। उन्होंने बताया कि भाषा सीखने के लिए रेडियो पर प्रसारित समाचार एवं आदर्श प्रस्तुति हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में कॅरियर के लिए अध्ययन जरूरी है। बहुआयामी उद्देश्यों पर पकड़ बनाने के लिए विद्यार्थियों को फिल्म जगत, खेल, राजनीति और हो रहे सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन आवश्यक है तभी समाचार लेखन में तुलनात्मक प्रस्तुति करने की समझ विकसित होती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में सदैव सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के पूर्व समन्वयक प्रो0 पी0पी0 सिंह ने कहा कि समाचार पत्रों का लेखन प्रतिदिन करना आवश्यक है। भाषा को सरल और सुगम्य बनाएं रखने के लिए ध्यान देने की जरूरत है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार रमाशरण अवस्थी ने कहा कि पत्रकारिता एक असाधारण क्षेत्र है। यह नित नयी घटनाएं प्रेरणा और सामर्थ्य प्रदान करती है, उन्हें पहचान कर सीखना होगा।

कार्यक्रम में विभाग के समन्वयक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विषय की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन विभाग के शिक्षक डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 राज नारायण पाण्डेय द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभाग के शिक्षक डॉ0 अनिल विश्वा, पुरातन छात्र एवं लखनऊ के पत्रकार प्रवीण तिवारी एवं अंकित शुक्ला सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहीं।

'खेल में भावनाओं की प्रासंगिकता' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

08 मार्च। 25 वें दीक्षांत समारोह के उपलक्ष्य में दीक्षांत सप्ताह के तहत शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग विज्ञान संस्थान के शारीरिक शिक्षा विभाग में 'खेल में भावनाओं की प्रासंगिकता' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के डॉ0 के0के0 यादव ने कहा कि खेल प्रदर्शन में संवेग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। खेल प्रदर्शन करते समय खिलाड़ियों को अपने संवेगों पर नियंत्रण करना होगा। इसके विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न संवेग खेल को प्रभावित करते है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

भारतीय जनमानस में नारी सदैव पूज्यनीय रही हैः कुलपति

08 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला सशक्तिकरण सुदृढ़ समाज की आवश्यकता विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमंते तंत्र देवता'' अर्थात् जहां पर नारी की पूजा की जाती है, वहीं पर देवता गण निवास करते है। इससे यह स्पष्ट है कि भारतीय जनमानस में नारी सदैव पूज्यनीय रही है। प्राचीन काल से ही नारी शक्ति को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। कुलपति ने बताया कि नारी प्रकृति की प्रतिनिधि होती है इसी में शक्ति समाहित है। भारतीय संस्कृति का आधार नारी है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि लखनऊ विश्वविद्यालय के सांख्यिकी विभाग की प्रो0 शीला मिश्रा ने बताया कि महिला दिवस का औचित्य तब तक नहीं सिद्ध होगा जब तक की सच्चे अर्थों में महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं हो सकता। राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब महिला शक्ति का उपयोग न केवल घरेलू कार्यों बल्कि देश के उत्थान में भी किया जाए। महिला और पुरूष दोनों ईश्वर की विशिष्ट रचनाएं है। दोनों का अपना अस्तित्व है।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि महापौर अयोध्या की पत्नी वंदना उपाध्याय ने कहा कि जहां स्त्रियों का सम्मान नहीं होता उस समाज में उत्थान भी नहीं हो पाता। ईश्वर की सबसे सुन्दर कृतियों में नारी सर्वश्रेष्ठ कृति है। जो दया, त्याग और प्रेम की प्रतिमूर्ति है।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने कहा कि स्त्री पुरूष एक दूसरे के पूरक है। शिक्षित और स्वयं में पूर्ण होंना ही लक्ष्य होना चाहिए। मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने कहा कि यह दिवस स्त्रियों की स्वतंत्रता व सशक्त होने का प्रतीक है। आजकल महिला ग्राम प्रधान से लेकर देश की राष्ट्रपति पद तक को गौरवान्वित कर रही है जो कि सशक्त होने का प्रतीक है। स्वागत उदबोधन सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अतिथियों का स्वागत किया एवं आत्मसुरक्षा की शपथ दिलाई।

कार्यक्रम में नारी सशक्तिकरण पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन मनीषा यादव ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 सिंधु सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर शिक्षकों एवं कर्मचारियों सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की सहभगिता रही।

गणित विषय से रोचक कोई अन्य विषय नहीं : अपर जिलाधिकारी

09 मार्च । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 में दीक्षांत सप्ताह के तहत आमंत्रित व्याख्यान माला में अयोध्या के अपर जिलाधिकारी संतोष कुमार सिंह ने 'इंजीनियर, गणित और उपयोग' विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गणित विषय से रोचक कोई अन्य विषय नहीं है। इसका अध्ययन व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है। इसके साथ ही उन्होंने ग्राफ बनाने की प्रकिया पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो0 शैलेंद्र कुमार ने की।

'इम्बेडेड सिस्टम डिजाइन' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

08 मार्च । 25 वें दीक्षान्त समारोह के तहत आयोजित दीक्षान्त सप्ताह में भौतिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग में 'इम्बेडेड सिस्टम डिजाइन' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता मोती लाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के डॉ0 मनीष तिवारी ने संबोधित करते हुए कहा कि दैनिक जीवन मे इम्बेडेड सिस्टम की उपयोगिता बढ़ रही है। सिस्टम के डिजाइन, पावर सेविंग एवं आप्टिमाइजेशन, स्पीड, एवं कम्पोनेन्ट के चयन, थ्रो–पुट परफारमेन्स, प्रोपेटाइप डेवलपमेन्ट टाइम जैसी प्रक्रियाओं से वर्तमान समय में तकनीकी सहायता मिल रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो0 अनुपम श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर प्रो0 राजकुमार तिवारी, प्रो0 एस0 एन0 शुक्ला, प्रो0 के0 के0 वर्मा, प्रो0 एस0 आर0 विश्वकर्मा, प्रो0 गंगा राम मिश्र, डॉ0 नरेश कुमार चौधरी, डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 सिन्धु सिंह तथा बी0 एस सी0 के सभी शिक्षक एवं विभाग के कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

•दीक्षांत सप्ताह के तहत 08 मार्च, 2021 को विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में ''इम्पैक्ट ऑफ बैक्टीरियल जींस एंड जीनोम्स आन आवर लाइफ'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

•दीक्षांत सप्ताह के अंतर्गत 09 मार्च, 2021 को विश्वविद्यालय के जैव रसायन विभाग में 'विज्ञान के विभिन्न आयाम' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

•दीक्षांत सप्ताह के तहत 08 मार्च, 2021 को विश्वविद्यालय के गणित एवं सांख्यिकी विभाग में 'मानव जीवन में सांख्यिकी का उपयोग' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

•25 वें दीक्षांत समारोह के तहत 09 मार्च, 2021 को विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग विज्ञान संस्थान में "योगिक जीवन शैली एवं उसका महत्व" विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

रुक जाना नहीं तू कहीं हारके, कांटो पे चलके मिलेंगे साए बहार के...

12 मार्च। 25वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक संध्या की शुरुआत आई0ई0टी0 के छात्र स्वप्निल त्रिपाठी द्वारा गणेश वंदना नृत्य से की गई। मुझे क्या बेचेगा रूपैया... गीत का रश्मि त्रिपाठी, शिवांगी श्रीवास्तव एवं नीलम पाठक ने समूह गायन प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आई0ई0टी0 के छात्र–छात्राओं ने 'कलयुग का रावण' विषय पर नाट्य प्रस्तुति कर दर्शकों का मनमोह लिया। वहीं दूसरी तरफ आफरीन खान, अभिनव मौर्य एवं शिव आशीष ने पंजाबी नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित जन को रोमांचित कर दिया। बी0सी0ए0 के छात्र कार्तिकेय पाण्डेय ने लिखे जो खत तुझे... गाकर समां बांध दिया। कार्यक्रम में शालिनी राजपाल, भावना, साक्षी साधवानी, वंशिका कोटवानी, सुहाना रमानी, जय प्रकाश क्षेत्रपाल, सुरेश एवं अभिषेक ने सिन्धी नृत्य की सामुहिक प्रस्तुति कर श्रोताओं को झूमने पर विवश कर दिया। योगोपचार विभाग के विद्यार्थियों, आकांक्षा, अंशिका, संध्या, अंचल, साधना, स्वेच्छा, आस्था, दीपेश, दीपशिखा, अक्षय, अश्विनी, अभिषेक, निहारिका, प्रीति, प्रियंका सोनम, ममता, बीना, दामिनी एवं कंचन ने योग नृत्य का संगीतमय मंचन किया। इसी क्रम में

परिसर के छात्र–छात्राओं द्वारा आदिवासी लोकनृत्य का शानदार मंचन किया गया। शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग विज्ञान संस्थान के शिक्षक डॉ0 अनुराग पाण्डेय ने रुक जाना नहीं तू कहीं हारके, कांटो पे चलके मिलेंगे साए बहार के...' गीत प्रस्तुत कर विद्यार्थियों में जोश भर दिया। परिसर की छात्र–छात्राओं ने 'डोला रे, डोला रे..', 'नैनो वाले ने..', 'मै तैनू समझावां... 'प्रस्तुत कर जनसमूह को रोमांचित कर दिया। कार्यक्रम के अंत में छात्र–छात्राओं द्वारा 'होली खेले रघुबीरा...' पर शानदार होली नृत्य का प्रस्तुति किया गया।

सांस्कृतिक संध्या का शुभारम्भ विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती लालिमा सिंह एवं कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 लक्ष्मण सिंह राठौर, प्रो0 राजीव बत्रा, प्रो0 आर0के0 मल्ल, प्रो0 आर0एन0 खरवार, डॉ0 के0के0 सिंह एवं डॉ0 जगवीर सिंह द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्रम भेंटकर किया। सांस्कृतिक संध्या का संचालन डॉ0 निखिल उपाध्याय द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

सांस्कृतिक संध्या में सीता स्वयंवर का हुआ मंचन

04 मार्च। स्वामी विवकानंद सभागार में विश्वविद्यालय के 46 वें स्थापना दिवस पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक संध्या की शुरूआत परिसर की छात्र–छात्राओं द्वारा गणेश वंदना के साथ की गई। छात्र–छात्राओं के द्वारा समूह गायन के रूप में रामचरित मानस का मंगल गान प्रस्तुत किया। योगोपचार विभाग की छात्र–छात्राओं द्वारा सामूहिक योग नृत्य का संगीतमय मंचन किया गया। कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं द्वारा केसरी फिल्म के गीत 'तेरी मिट्टी में मिल जावां, गुल बनके खिल जावां...' की प्रस्तुति कर देश भक्ति से श्रोताओं को सराबोर किया। छात्रों ने 'हे राम, हे राम जग में साचो तेरो नाम....' भजन प्रस्तुति से सभागार को भक्ति रस से सराबोर कर दिया। परिसर की छात्राओं द्वारा मध्य प्रदेश के मालवा के परंपरागत

जनजातीय लोकनृत्य का मंचन किया। कार्यक्रम के अंत में छात्र–छात्राओं द्वारा रामलीला प्रसंग में सीता स्वयंवर, धनुष भंग, परशुराम लक्ष्मण संवाद पर नाट्य मंचन कर प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को सजीवता के साथ प्रस्तुत किया गया।

सांस्कृतिक संध्या का शुभारम्भ कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह सहित अन्य अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। उसके उपरांत कुलगीत की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने अतिथियों का स्वागत किया। सांस्कृतिक संध्या का संचालन डॉ0 निखिल उपाध्याय द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

विज्ञान वार्ता एवं पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन

28 फरवरी । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के इनोवेशन सेल द्वारा विज्ञान दिवस के अवसर पर परिसर के संत कबीर सभागार में विज्ञान वार्ता एवं पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर के वैज्ञानिक प्रो0 एच0एस0 मिश्र ने छात्रों को गामा रेडिएशन प्रतिरोधक क्षमता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि बैक्टीरिया गामा रेडिएशन से डीएनए में होने वाले विघटन को बड़ी सरलता से प्राकृतिक स्वरूप में वापस जोड़ देता है। यह डी0एन0ए0 डैमेज रेस्पॉन्स एवं सेल साइकल रेगुलेशन प्रोटीन फास्फोरिलेशन से रेगुलेट होता है, जो यूकेरियोटिक सेल से काफी मिलता है। प्रो0 मिश्र ने बताया कि इस बैक्टीरिया में अन्य बैक्टीरिया से अलग कई जीनोम एलिमेंट पायी जाती हैं। उन्होंने छात्रों से विज्ञान दिवस पर विस्तृत वार्ता की।

कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि प्रो0 एच0एस0मिश्र के वैज्ञानिक योगदान के विषय में विस्तार से जानकारी प्रदान की। सेल के नोडल आफिसर प्रो0 शैलेंद्र कुमार ने अतिथियों का स्वागत एवं कार्यक्रम का संचालन करते हुए उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 तुहिना वर्मा द्वारा किया गया। सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग, पर्यावरण विभाग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स तथा इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

मैराथन का उद्देश्य प्रतिभागियों में खेल भावना का विकास करना है: खेल निदेशक

21 फरवरी। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के क्रीड़ा परिषद एवं उत्तर प्रदेश एथलेटिक्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ अयोध्या हाफ मैराथन–2021 का आयोजन किया गया। मैराथन प्रतियोगिता का शुभारम्भ मुख्य अतिथि ओलम्पियन, अर्जुन पुरस्कार प्राप्त एवं उत्तर प्रदेश के खेल निदेशक, डॉ0 आर0पी0 सिंह एवं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह, विशिष्ट अतिथि के रूप में द्रोणाचार्य पुरस्कार प्राप्त जे0एस0 भाटिया, अर्जुन पुरस्कार प्राप्त धावक गुलाब

चन्द्र, अवध प्रांत के क्रीड़ा भारती के निदेशक अवनीश सिंह, पी0ई0एफ0आई0 के जनरल सेक्रेट्री पीयूष जैन, ब्रिगेडियर डोगरा रेजीमेंट जे0के0 एस0 विर्क, कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी धनजंय सिंह अन्य अतिथियों ने नारियल फोड़कर, फीता काटकर एवं फ्लैग ऑफ करके किया।

प्रतियोगिता के समापन पर मुख्य अतिथि डॉ0 आर0 पी0 सिंह ने कहा कि आज विश्व में सबसे ज्यादा युवा भारत में है। देश में देखा जाए तो युवाओं की संख्या सबसे अधिक अपने प्रदेश में है। विश्वविद्यालय द्वारा इस तरह का आयोजन एक अच्छी पहल है। उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि मैराथन का उद्देश्य खिलाड़ियों में खेल में खेल भावना का विकास करना है। सर्वागींण भावना का विकास चाहते हैं तो खिलाड़ी बनें। इस मैराथन से खिलाड़ी अपनी प्रतिभा से परिचित होते हैं। प्रधानमंत्री के फिट इंण्डिया मुहिम में इस प्रकार का मैराथन विश्वविद्यालय द्वारा एक महत्वूपर्ण योगदान है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी प्रतियोगिता में हार जीत होती रहती है। हार से सबक लेना चाहिए। निरन्तर प्रयास करते रहे। एक दिन ऐसा समय आयेगा कि आप सफलता की सीढ़ी पर चढ़ सकेंगे। कुलपति प्रो0 सिंह ने इस मैराथन में आये हुए अतिथियों, आयोजक मंडल, विश्वविद्यालय परिवार एवं खिलाड़ियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी को शुभकामनाएं दी।

ब्रिगेडियर जे0 के0 एस0 विर्क ने कहा कि दुनिया के सबसे युवा देश भारत में खेल गतिविधि सबसे अच्छी बात है, इससे बच्चों में खेल के प्रति मजबूत धारणा बनेगी। यही खिलाड़ी हमारे देश का प्रतिनिधित्व करते है एवं देश का मान बढ़ाते हैं। खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए क्रीड़ा भारती के निदेशक अवनीश सिंह ने कहा कि खेल से चरित्र का निर्माण होता है और चरित्र से राष्ट्र का निर्माण होता है। इस तरह के कार्यक्रम खिलाड़ियों में नई ऊर्जा का संचार करते है। अर्जुन पुरस्कार प्राप्त धावक गुलाब चन्द्र ने कहा कि खेल का कोई जाति धर्म नहीं है, इसमें सभी प्रतिभागी इन सबसे ऊपर उठकर खेल की भावना के साथ खेलते हैं।

प्रतियोगिता की शुरूआत में डोगरा रेजीमेंट की बैंड पार्टी द्वारा राष्ट्रीय धुन एवं समापन पर राष्ट्रगान की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम में अतिथियों एवं प्रतियोगिता के निर्णायकों एवं सदस्यों को स्मृति चिन्ह एवं पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा द्वारा किया। कार्यक्रम का संचालन मनीषा यादव एवं डॉ0 निखिल उपाध्याय द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के दौरान बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

अयोध्या मैराथन में रूबी और श्याम बने विजेता

21 फरवरी। चतुर्थ अयोध्या हाफ मैराथन–2021 में 21 किलोमीटर की इस मैराथन में लगभग एक हजार से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें पुरस्कारों के तहत महिला वर्ग में प्रथम पुरस्कार 25 हजार का मुजफ्फरपुर की रूबी कश्यप को मिला, 21 हजार का द्वितीय पुरस्कार अमरोहा की रेनू को, तृतीय पुरस्कार 15 हजार का मुजफ्फरपुर की अर्पिता सैनी को मिला, चतुर्थ पुरस्कार 11 हजार का वाराणसी की तामसी को एवं पंचम पुरस्कार 07 हजार का बरेली की विनीता गुर्जर को मिला। पुरूष वर्ग में 25 हजार का प्रथम पुरस्कार इलाहाबाद के श्याम को दिया गया। द्वितीय पुरस्कार 21 हजार का मेरठ के वीनू कुमार को, तृतीय पुरस्कार 15 हजार का हरियाणा के सुनील कुमार को दिया गया। अयोध्या के हरिओम तिवारी को चतुर्थ पुरस्कार 11 हजार से एवं पंचम पुरस्कार हरियाणा के अशोक पाल को सात हजार से पुरस्कृत किया गया। पुरूष एवं महिला वर्ग के पांच अन्य प्रतिभागियों को एक–एक हजार रुपए का सांत्वना पुरस्कार जिसमें सपना, निशा, किरन, प्रीति, नीता, जॉनी कुमार, संतोष कुमार, विशाल, धमेन्द्र मनोज पाल को दिया गया।